परिशिष्ट

चन्द्र कान्ता,
बी-769, पालम विहार, गुड़गांव- 122017 (हरियाणा)
9/10/99

प्रिय मार्क जी,

नमस्कार. आपका पत्र आज ही मिला। प्रसन्नता हुई कि आप मेरी कहानियों के चित्रित मध्यवर्गीय आधुनिक जीवन पर एक फिल्म के लिए सोच रहे हैं। आपने दो कथा-संग्रहों का ज़िक्र किया है - दहलीज़ पर न्याय, और सूरज उगने तक। यदि आप कहानियाँ ले रहे हैं तो नवीनतम मेरे दो और संग्रह आपको लेने चाहियें, वे हैं:—

1 ओ सोनकिसरी, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन प्रा॰
1/बी नेताजी सुभाष मार्ग,
दरियागंज, नई दिल्ली-2

2 काली बर्फ - प्रकाशक - किताबघर
24/4855
अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-2.

आप कृपया सीधे प्रकाशकों से या यदि वहाँ किसी पुस्तक विक्रेता से प्राप्त हो सकें, तो इन्हें अवश्य खरीद कर पढ़ें। यों मेरे ग्यारह कथा संग्रह हैं पर सभी खरीदना आवश्यक नहीं, यदि पुस्तकालयों से भी उपलब्ध हों, तो पढ़िएगा। आपने पूछा है कि कौन सा कहानी संग्रह मध्यवर्गीय जीवन पर आधृत है। यदि आपने

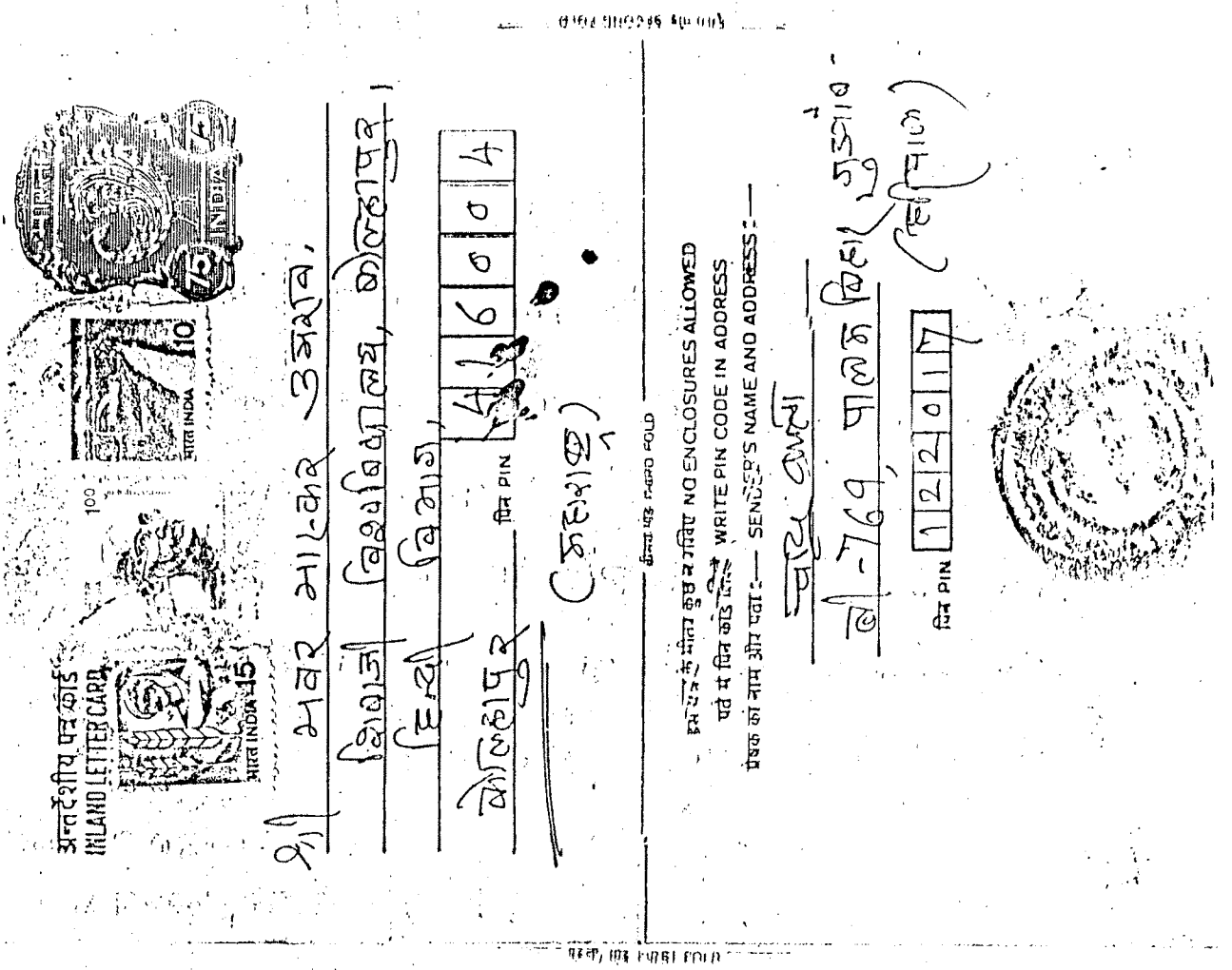

कुछ कहानियाँ पढ़ी हैं, 'सूरज उगने तक' भी, या इसलिए पर ध्यान भी, तो आपको ज्ञात होगा कि मेरी अधिकांश कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन की ही विभिन्न समस्याओं पर आधृत हैं; कुछ कहानियाँ जैसे 'सुरंगाई' निम्न वर्ग से संबंधित हैं पर वहाँ भी मध्यवर्गीय मानसिकता कहीं न कहीं अपने विभिन्न पात्रों में झलकती है। आप दो संग्रह (जिनके पते मैंने दिए हैं) उन्हें भी अपने शोध में अवश्य शामिल करें। 'जो लौटकर' में लगभग सभी कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन पर ही लिखी गई हैं। आपके गाइड कौन हैं? वे अवश्य आपका मार्गदर्शन करेंगे। शेष मंगल। मेरी शुभकामनाएँ।

शुभाकांक्षी

कथा पत्र और
स्मरण

चन्द्रकान्ता
3020 / सेक्टर-23
गुड़गाँव-122017
(हरियाणा)

8.6.2000

प्रिय भास्कर,

काफी समय पहले तुम्हारा कार्ड मिला था. उत्तर में मैंने अपना जीवन परिचय आदि भेजा था। यदि मेरे साहित्य या जीवन वृत्त के विषय में कुछ और जानकारी चाहिए तो अशोक [illegible] से ले सकते हो। कहानियों की समीक्षायें भी उनके पास मिलेंगी। यदि कुछ और मदद चाहिए तो लिखना.

शेष शुभ.

आशा है तुम्हारा काम ठीक से चल रहा होगा.

मेरा आशीर्वाद!

शुभाकांक्षी

चन्द्रकान्ता

SHIVAJI UNIVERSITY

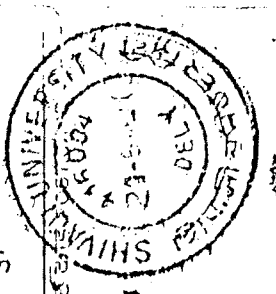

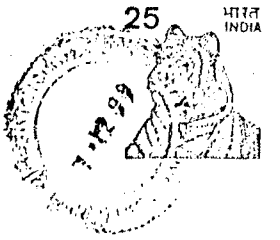

25 भारत INDIA

श्री भवर भास्कर अराव
शिवाजी विश्वविद्यालय,
हिंदी विभाग, कोल्हापूर

पिन PIN | को | ल्हा | पु | र | – | –

43883 [illegible]

परिचय

नाम : चन्द्रकांता

जन्म : श्रीनगर, कश्मीर में सितम्बर, 1938 ई. को प्रोफेसर रामचन्द्र पंडित के घर में हुआ ।

शिक्षा : एम. ए. बी. एड.
बी. ए. तक की परीक्षा श्रीनगर, कश्मीर के वीमेन्स कालेज और गांधी मेमोरियल कालेज में हुई । एम. ए. हिंदी साहित्य में पिलानी, राजस्थान यूनिवर्सिटी से किया । बी. एड. में जम्मू-कश्मीर यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त किया और एम. ए. में बिरला आर्ट्स कालेज में द्वितीय स्थान

प्रकाशन : अब तक आठ कहानी संग्रह प्रकाशित ।

क्र. सं.	नाम	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशक
1.	सलाखों के पीछे	1975	स्वाति प्रकाशन, हैदराबाद
2.	गलत लोगों के बीच	1984	राजधानी प्रकाशन, सफदरजंग एन्क. नई दिल्ली
3.	पोशनूल की वापसी	1988	पराग प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली
4.	दहलीज़ पर न्याय	1989	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2/35, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002
5.	ओ सोनकिसरी !	1991	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1/बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
6.	सूरज उगने तक	1994	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली - 110003
7.	कोठे पर कागा	1993	किताबघर 24/4855, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002
8.	काली बर्फ	1996	किताबघर नई दिल्ली - 110002

उपन्यास

अब तक छः उपन्यास प्रकाशित

1.	अर्थान्तर	1981	प्रभात प्रकाशन 4/19, आसफ अली रोड, नई दिल्ली - 110002
2.	अंतिम साक्ष्य	1990	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3.	बाकी सब खैरियत है	1983	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
4.	ऐलान गली ज़िंदा है	1984	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5.	यहाँ वितस्ता बहती है	1992	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6.	अपने अपने कोणार्क	1995	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

कविता संग्रह - यहीं कहीं आसपास - 1990 नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

कथा संकलन

1.	चर्चित कहानियाँ	1997	सामयिक प्रकाशन, 3543, जटवाड़ा, दरियागंज नई दिल्ली - 110002 (3320-21)
2.	प्रेम कहानियाँ	1996	समय प्रकाशन, जी 1/5 मॉडल टाऊन-III दिल्ली-9
3.	आंचलिक कहानियाँ	1998	कादंबरी प्रकाशन, 5451, शिव मार्केट, न्यू चन्द्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली - 110007

शीघ्र प्रकाश्य

उपन्यास : कथा सतीसर माथा : कथा संग्रह : अंतिम अपराध

पुरस्कार : जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी से तीन पुस्तकों को अर्थान्तर, ऐलान गली ज़िंदा है एवं ओ सोनकिसरी बेस्ट बुक अवार्ड, 1982, 1986, 1994 में ।
मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से दो पुस्तकें - बाकी सब खैरियत है एवं पोशनूल की वापसी पुरस्कृत 1983 और 1989 में ।
हरियाणा साहित्य अकादमी से अपने अपने कोणार्क 1997 में पुरस्कृत ।
राष्ट्र की प्रथम महिला, श्रीमती विमला शर्मा द्वारा सम्मानित ।
देश-विदेश में गोष्ठियों, सेमिनारों में भाग लिया । उड़ीसा, कर्नाटक, हैदराबाद, चंडीगढ़, पटियाला, बरेली, भोपाल, कोटा, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली आदि प्रदेशों में साहित्यिक आलेख पढ़े, कवि सम्मेलनों में भाग लिया । अमरीका में गदर मेमोरियल हाल सेनफ्रांसिस्को में स्वतंत्रता की 50वीं जयंती के उपलक्ष्य में हुए समारोह में काव्य पाठ किया ।
केलिफोर्निया के मिलपीट्स शहर में पंजाबी साहित्य सभा के आमंत्रण पर कथा वाचन किया ।
सैनहोज़े के अमरीकी-भारतीय सभाओं में कथा पाठ ।
फ्रीमांट शहर में स्थानीय भारतीय साहित्य मंच के आमंत्रण पर कथा पाठ एवं काव्य पाठ ।

भ्रमण : भारत के विभिन्न प्रांतों एवं विदेश में अमरीका के विभिन्न प्रदेशों का भ्रमण । कश्मीर से हैदराबाद, कलकत्ता, भुवनेश्वर से बंबई, उत्तरप्रदेश में आगरा से देहरादून और अब दिल्ली हरियाणा की देहरी पर ।

लेखन : लेखन यों तो बारह वर्ष की उम्र में एक कविता से शुरू हुआ पर नियमित लेखन 1967 ई. से । पहली कहानी "खून के रेशे" कल्पना मासिक, हैदराबाद में प्रकाशित हुई ।
सामयिक राजनीति, समाज व्यवस्था एवं आर्थिक-नैतिक व्यवस्थाओं से त्रस्त मनुष्य की व्यथा कथा मेरे लेखन का केंद्र है और एक बेहतर व्यक्ति एवं बेहतर समाज मेरी उम्मीद । लिखना मेरी विवशता भी और आंतरिक ज़रूरत भी है । इसी के द्वारा मैं जीवन और जगत के अनसुलझे प्रश्नों, विडम्बनाओं के उत्तर खोजती हूं । गलत का अस्वीकार कर सही रास्ते तलाशती हूं ।

संप्रति : स्वतंत्र लेखन

पता : चन्द्रकांता
3020, सैक्टर-23, गुड़गांव-122017 (हरियाणा)

व्यक्तित्व

मेरे प्रेरणा स्रोत

चन्द्रकान्ता

मेरी जन्मभूमि कश्मीर है. धरती के इस टुकड़े को इतिहासकार कल्हण ने पृथ्वी का स्वर्ग कहा. मुगल सम्राट जहाँगीर यहाँ की अलमस्त लेटी झीलों में, बर्फ ढंके बुजुर्ग पहाड़ों में अपने चेहरे देखते, और पत्थर पचाने की कूवत रखते, खिलंदड़े चश्माशाहियों की झागल फुहारों को देख मुग्ध होकर कह उठा था, 'गर फिरदौस बर रूए जमीन अस्त, हमीं अस्तो, हमीं अस्तो, हमीं अस्त.'

जन्मभूमि किसी भी रचनाकार के अनुभवों और अहसासों की ज़मीन होती है. मेरे अनुभव भी यहीं जन्मे लेकिन उनमें पहाड़, झील, झरने, कद्दावर चिनार और उन पर चहकते गुग्गी, पोशनूल ही नहीं हैं, मेरे अनुभवों में वितस्ता नदी के रूप में चिरकाल से बहती पार्वती है, उस पर तैरते पूजा के फूल, डोंगे शिकारे, ढोंगे, डाहबों में धड़कता जीवन और किनारों पर बहती मलमूत्र की नालियाँ भी हैं. वितस्ता के किनारे वाले घर आँगन में दोस्तों, बहन, भाइयों के साथ खेले खेल, रस्सीटप्पा, कीकलियाँ और रूठन-मनौवल, शैतानियाँ-गुस्ताखियाँ भी हैं. शिवरात्रि में आधी रात तक, उत्सवी गंध बीच आँखों में नींद लिए शिवशंकर की आरती के झकोले खाते बोल, लैला मजनूई किस्से, युवा साथियों के साथ स्नोमैन बनाने, नई बर्फ की दावतें खाने और बुला-बुला कर सँवरी सहेजी बर्फ के अनवरत गिरते 'कुचिहा गिलगुद' में जी का जंजाल बनने के किस्से भी शामिल हैं. आसपास बिखरे रोग-शोक, दुख-दारिद्र्य, आडंबर, करुणा, दया ने भी मुझे झकझोरा है. साथ में मेरे साथ हुए निजी हादसे, वे चाहे हारवन के प्राकृतिक वैभव बीच चिनार के साए में लेटी मेरी तीस वर्षीया माँ हों या सत्रह वर्षीय नई-नई माँ बनी मेरी बहन, जो किए या हो गए एक्सीडेंट की शिकार हो झागल सिन्ध की हरहराहट में अपनी अनगिनत अनकही बातों के साथ चुप हो गई, अनेकों दुखद प्रसंग, जिन्होंने बाल-मन के संवेदन तंत्र पर गहरी खरोंचें डालीं. मैंने क्रौंच पक्षी की आर्त पुकार एक अलग शक्ल में अपने भीतर उठती सुनी और उसी पुकार ने मुझे रचनाकार बनाया.

उम्र के पहले-पहले वर्षों में घटित सही-गलत, स्मृतियों के खाते में ही दर्ज नहीं होता, वह हमें गढ़ने में भी एक अहम रोल अदा करता है. बाइस वर्ष तो बहुत होते हैं व्यक्ति के कोई शक्ल अख्तियार करने के लिए.

बाइस वर्ष कश्मीर में बिताने के बाद मैं पति के साथ पिलानी (राजस्थान) चली आई. छः वर्ष वहाँ रही. पहले अध्ययन और फिर दो वर्ष अध्यापन करने के बाद हैदराबाद चली गई. हैदराबाद में ही मेरा नियमित लेखन आरम्भ हुआ. यों पहली कविता तो बारह वर्ष की उम्र में लिखी, फिर स्कूल कॉलेज की पत्रिकाओं के लिए कुछ कविताएँ,

गुड़गांव,
7/2/2000

प्रिय कमला.

आपका संक्षिप्त जीवन परिचय एवं आलेख 'मेरे प्रेरणा स्रोत' भेज रही हूं। इससे मेरे जीवन एवं लेखकीय स्रोतों का परिचय मिल जाएगा। शेष तो मेरी कृतियों को पढ़कर आप अपने निष्कर्ष निकालेंगी। आशा है आपका शोध निर्विघ्न सम्पन्न हो रहा है।

मेरा पता बदल गया है, नया पता नोट करें।

शुभेच्छा,
चन्द्रकान्ता

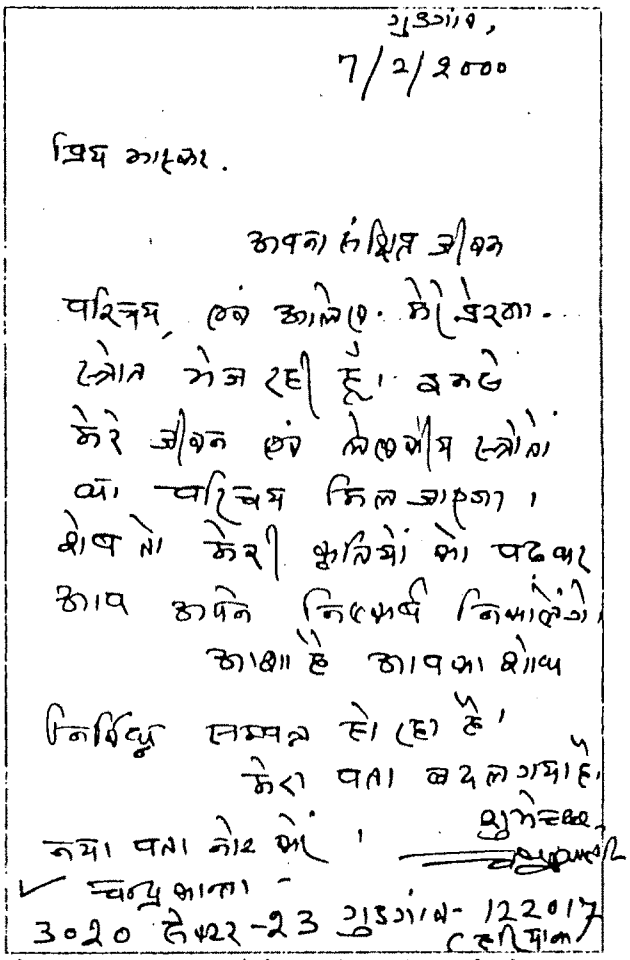

चन्द्रकान्ता
3020 सेक्टर-23 गुड़गांव-122017 (हरियाणा)

हैदराबाद में सितंबर 1967 में मेरी पहली कहानी 'खून के रेशे' कल्पना में छपी, अक्टूबर में नई कहानियाँ में 'जिल्टस' और 19[illegible] में ज्ञानोदय में 'सलाखों के पीछे' कहानियाँ प्रकाशित हुईं. तब से आज तक मैंने कलम रोकी नहीं. नौकरी छोड़ दी और तमाम प्रतिबद्धता के साथ लेखन के साथ जुड़ी. पहले-पहले मालूम नहीं, मेरे विषय में क्या सोचा

कहीं, मेरे विषय में क्या सोचा गया. हिन्दी प्रदेशों से दूर एक नई अजानी लेखिका. अहिन्दी प्रदेश में जन्मी-पली, एक अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखिका. नाम भी क्या? चन्द्रकान्ता. न आगे कोई उपसर्ग, न पीछे कोई प्रत्यय. सिर के ऊपर गुंबद भी नहीं. न किसी गुट में, न खेमे में फिर भी कल्पना में छपी.

लेकिन उस दौर में कल्पना, ज्ञानोदय, नई कहानियाँ जैसी खेमेबाजी से दूर साहित्यिक पत्रिकाएँ थीं जो लेखकों से ज्यादा रचनाओं को महत्त्व देती थीं, तभी न कश्मीर पर लिखे गए एक फ़ीचर 'गर्म वस्त्रों में लिपटा एक ठंडा शहर' पर अमृतराय जी ने (जो उन दिनों नई कहानियों का संपादन करते थे) मुझे बधाई का तार भेज दिया. एक नए लेखक के लिए वह बहुत बड़ा पुरस्कार था, आज के लखटकिया पुरस्कारों से ज्यादा महत्वपूर्ण, जिसे मैंने आज तक सँभाल कर रखा है.

सत्तर का दशक साहित्य जगत में नए प्रयोगों व बहस मुबाहसों का दौर था. अकहानी अकविता का दौर. 'नई कहानी' के विरोध में चल पड़ा 'अकहानी' का नारा. अकहानी वाले नई कहानी के रचनाकारों को कुछ कुछ इसी प्रकार नकार रहे थे, जिस प्रकार नई कहानी के खेमे वालों ने अपने अग्रजों जैनेन्द्र, अज्ञेय आदि को खारिज कर दिया था. 'इमारत ऐतों का विद्रोह' शीर्षक से कल्पना में लेखमाला छप रही थी और 'सार्थक विद्रोह, दशा-दिशा संभावना' को मद्देनज़र रख कर अमृतराय नई कहानियाँ पत्रिका में एक स्तम्भ लिख रहे थे जिसमें कामू-काफ़्का की नकल और छद्म आधुनिकता का विरोध था और लेखन को समकालीन जीवन के सच से जोड़ने का आग्रह था. इस स्तम्भ ने कई रचनाकारों को दिशा दी. मैं भी उनमें से एक थी.

करीब तीस वर्ष की लेखन यात्रा के दौरान मैंने जाना है कि रचनाकार पहले पहल निजी सघन अनुभूतियों को रचनाओं में पिरो कर अपने होने और जीने की अर्थवत्ता ढूँढता है, भीतर उठते प्रश्नों के उत्तर तलाशता है, धीरे-धीरे अनुभव सम्पन्नता से रच कर वह बड़े समाज के यथार्थ से जुड़ कर, सामाजिक-राजनीतिक कुरूपताओं और आर्थिक अवस्थाओं के परिणाम भोगते व्यक्ति की पीड़ा की व्यथा-कथा कहने लगता है.

रचना कभी किसी अचानक क्षण में आलोक की तरह भीतर कौंध जाती है. कृष्णा सोबती के शब्दों में कहूँ तो 'किसी एक मुबारक क्षण में रचनाकार के दिल दिमाग पर दस्तक देती है.' मेरे लिए यह दस्तक प्रसंगों, स्थितियों की तात्कालिक प्रतिक्रियाओं के रूप में नहीं आती, बल्कि उन स्थितियों के मन के किसी कोने में लंबी अवधि तक पड़े रहने के बाद बंद दरवाजों को खुलने की चीख के साथ आती है. इस बीच घटनाओं के प्रभावों का मंथन-दोहन जेहन में चलता रहता है.

जीवन की विषमताएँ-विसंगतियाँ हों या व्यवस्था से उपजी यंत्रणाएँ, मेरे संवेदन तंत्र को छूकर जो भी स्थिति मुझे झकझोर [illegible] है, मैं उस स्थिति से प्रभावित व्यक्ति से एकात्म होकर [illegible] भूमिका में आ जाती हूँ और पूरे परिदृश्य का पुनर्सृजन [illegible] तलाशने की कोशिश करती हूँ. कभी यह कोशिश सीधे प्रश्न [illegible] है, कभी तल्लेश्वरी- 'रेत में फल बोने की चेष्टा,' पर कभी कोई प्रकाशलीक भी नज़र आती है. मेरे लिए रचना में स्थितियों का [illegible] भर काफी नहीं, उसमें मानव जिजीविषा को छोटा करने वाली [illegible] के प्रतिरोध और नकार की गूँज भी होनी चाहिए, जो नए मूल्य-निर्माण में सहायक हो सके, पाठकों की चेतना को विस्तार भी दे और [illegible] भी करे.

कहानियों-उपन्यासों के कथ्य मुझे अपने आसपास मिले, मुझे उन्हें ढूँढने-खोजने की ज़रूरत नहीं पड़ी. सामाजिक कुरूपताएँ, अवसरवादी राजनीति के प्रभावों से दलित व्यक्ति की पीड़ा [illegible] लिखने के लिए उकसाती है. जीवन की ऊर्जा सोखने वाली एक [illegible] और व्यक्ति की चेतना को बौना कर देने वाली क्रूर व्यवस्था ने मेरी लेखकीय संवेदना को कचोटा है. अध्ययन, मनन में मेरा विश्वास है. अपने अग्रजों से लेकर नए उभरते रचनाकारों को भी मैं [illegible] कर पढ़ती हूँ.

मेरे पहले उपन्यास 'अर्थान्तर' में [illegible] की दोहरी नीतियाँ, दाम्पत्य जीवन का खोखलापन और [illegible] की यंत्रणा सहती स्त्री के अन्तर्द्वन्द्व के माध्यम से बदलते संदर्भों में उपादेयता खो चुकी मान्यताओं का पुनर्परीक्षण और पुनर्निर्माण भी है. हालाँकि यह अहसास साथ चलता है कि कोई भी निष्कर्ष अन्तिम नहीं होता, रचनाकार तो वैकल्पिक संभावनाओं को रेखांकित भर करता है.

पुरुष की तरह स्त्री को भी मैंने स्वतंत्रचेता और विशिष्ट माना है. अपनी सामाजिक पारिवारिक भूमिका में वह सजग, विवेकशील और अपने अधिकार कर्तव्य के प्रति सजग है. मैं मनुष्य की मुक्ति की कामना करती हूँ, उसमें स्त्री पुरुष दोनों हैं. आंदोलनों की पक्षधर मैं नहीं हूँ.

मेरा दूसरा उपन्यास 'अन्तिम साक्ष्य' जम्मू की [illegible] और डुग्गरों की ठाकुरी आनबान के साथ, एक भिन्न परिवेश के [illegible] रचा गया है. उसमें टूटने, ढहने और फिर से खड़े होने की जिजीविषा है. मानवीय ऊर्जा का दुर्निवार आवेग है और तमाम आशंकाओं और विसंगतियों के बाद बचा मंगल भाव है, एक अनूठा [illegible], जिसे परिभाषा में बाँधना सहज नहीं है. मुझे याद है, इस उपन्यास को पढ़ कर जैनेन्द्र जी ने मुझसे स्नेहसिक्त शरारत के लहजे में कहा था, [illegible] उपन्यास पढ़ कर मन हुआ, तुम्हें गले लगा लूँ, पर अब मैं बूढ़ा [illegible] हो गया हूँ.' कनॉट प्लेस में जब 'अर्थान्तर', 'अन्तिम साक्ष्य' [illegible] पर गोष्ठी हुई तो जैनेन्द्र जी ने महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ [illegible]

चौंका दिया था कि ' मैंने कई वर्षों से 'अन्तिम साक्ष्य' जैसा उपन्यास नहीं पढ़ा था.'

हमारे एक समीक्षक मित्र का कहना है कि जैनेन्द्र जी ने 'कुछ युवा लेखिकाओं की पीठ ठोक कर जहाँ उन्हें प्रोत्साहित किया, किसी हद तक उन्हें आत्ममुग्ध भी बनाया, वहीं अपने लिए कई विवाद भी मोल लिए....' मुझे ऐसे सूक्ति वचन पढ़ कर मुड़ कर देखने का मन होता है. लेखन के हर दौर में कई मित्रों ने महिला-लेखन को दोयम दर्जे का मान कर उनकी समृद्ध कृतियों या तो नज़रअंदाज कर दिया या साहित्य में भी पुरुष वर्चस्व बनाए रखने के लिए उनकी छीछालेदर की. लेकिन उनकी इस कसरत के बावजूद महिलाओं ने अच्छी कृतियों से साहित्य को समृद्ध किया. लेखन के प्रति प्रतिबद्ध महिला रचनाकार जब तीखी तुर्श समीक्षाओं के नेज़े-भाले सह कर अपने सरस्वान होने का सबूत दे गई तो भला बुज़ुर्ग साहित्यकारों के स्नेह स्पर्श से वे आत्ममुग्ध कैसे हो सकती थी. हाँ, प्रोत्साहित ज़रूर हुई होंगी. जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैं तब नई-नई हैदराबाद से दिल्ली आई थी. वहाँ बद्री विशाल पित्ती, मुनीन्द्र, ऋषि मधुकर, ओमप्रकाश निर्मल, राजा दुबे, वेणु गोपाल और दीप्ति खण्डेलवाल से सहज आत्मीय संबंध थे. एक दूसरे की रचना सुनने, सुनाने का चलन था, दिल्ली का मिज़ाज दूसरा था. यहाँ बाहरी लेखकों को तभी पढ़ा या चर्चित किया जा सकता था, जब उसके सिर पर कोई वरदहस्त हो. बहरहाल जैनेन्द्र जी ने मुझे पढ़ा और सराहा. वे अपने आप में अनूठे थे, सरल, निष्कपट, चाहे कितने विवादास्पद रहे हों.

मेरा तीसरा उपन्यास 'बाकी सब खैरियत है' आर्थिक कारणों से संबंधों में आते तनाव को लेकर लिखा गया. आर्थिक हितों और भौतिक समृद्धि के आगे त्याग, सेवा, जैसे मूल्य क्यों और कैसे हल्के पड़ जाते हैं, इसे देश और विदेश में बसे दो परिवारों के सोच और व्यवहार के संदर्भों में परखा गया. मेरा मानना है कि साहित्य में निजी और पराया कुछ नहीं होता क्योंकि यह साँझी संवेदना की ज़मीन है. मैंने 'पोशनूल की वापसी', 'लौटाई', 'बदले हालात में' आदि कहानियों और 'यहाँ वितस्ता बहती है', ' ऐलान गली ज़िन्दा है' आदि उपन्यासों में देखे भोगे अनुभव खंडों को जिस आत्मीयता से पिरो कर आम पाठक की संवेदना का हिस्सा बनाया, उसी अंतरंगता के साथ अनुभूत सत्य को 'पत्थरों के राग', 'आत्मबोध', 'आवाज़' आदि कहानियों और 'अवान्तर', 'अपने अपने कोणार्क' आदि उपन्यासों में गूँथ दिया है.

मेरा चौथा उपन्यास ' ऐलान गली ज़िन्दा है' साहित्य में मेरी एक अलग पहचान का कारण बना. शायद इसलिए भी कि इस उपन्यास के माध्यम से हिन्दी जगत में पहली बार कश्मीर के मध्यवर्गीय जीवन को प्रचलित गुलदस्तों, फ़िल्मी तस्वीरों और कृत्रिम चन्दरोज़ रोमानी सौन्दर्य से अलग, लोकसंस्कृति के आईने में एक भिन्न रूप में देखा. इस उपन्यास में मैंने अंतरंग परिवेश को [illegible], मिट्टी, संघर्ष और राजनैतिक सामाजिक परिस्थितियों के [illegible] समाज की कथा दर्ज है. सुदूर अतीत गौरव से मंडित, मध्य काल के आतंक से त्रस्त, अनिश्चित वर्तमान के धक्के झेलते, भविष्य की उम्मीदों में जीते लोगों की दास्तान है. ' ऐलान गली' सिर्फ़ दौर [illegible] से आती एक भरपूरी सृष्टि है, जिसमें धर्मनिरपेक्ष [illegible] में व्याप्त रूढ़ नैतिकताओं और अपनी बनाई सीमाओं के [illegible] लोग हैं, दरार पड़ती साँझी परंपराओं और ढहते ढाँचों की पीड़ा झेलते बुज़ुर्ग हैं, रोज़ी-रोटी की तलाश में घर दुआर छोड़, देश-देशान्तरों में भटकते युवा हैं. लड़ाई झगड़े और एक दूसरे के सुख दुख में [illegible] मक्खनबाज़ी की रिवायतों के साथ कभी न सूखने वाले करुणा के स्रोत हैं. [illegible] कुछ है जो सोच को उकसाता है और आश्चर्य और [illegible] भी जगाता है.

मुझे उन वादियों ने भी लिखने को प्रेरित किया जो [illegible] सरोकारों के लिए नदी की तरह बहे और [illegible] और पीठ पीछे की रोशनियाँ बने. ऐसे एक व्यक्ति [illegible] 'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास लिखवाया.

मुझे भारत के और विदेश के कई प्रान्तों में [illegible] मिला. यहाँ के विशिष्ट लोक रंगों और [illegible] में ढाला है. 'अनेकों चार मीनार', [illegible] हैदराबाद-आंध्र की संस्कृति झलकती है तो '[illegible]', '[illegible] सुहार' में पंजाब के विशिष्ट रंग हैं. कश्मीर तो मेरी अनेकों कहानियों में जीवंत हो उठा है. 'पोशनूल की वापसी' में यदि कश्मीर का शान्त समय है तो 'काली बर्फ़', 'शरणागत दीनानाथ', 'नवशीन मुबारक' आदि कहानियों में आज का आतंक-जर्जर कश्मीर बोलता है.

मैं उड़ीसा में छः वर्ष रही. उड़ीसा कथा कहानियों, सागर, कोणार्क और जगन्नाथ का प्रदेश है. यहाँ मुझे 'कुनी' मिली जो 'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास लिखने का कारण बन गई. वो कारण महज़ एक व्यक्ति न होकर जीवन की अनंत संभावनाओं में से उभर आए कुछ अनुभव खंड होते हैं, उनमें कुछ प्रश्न होते हैं, कुछ जिज्ञासाएँ भी शामिल होती हैं, जिन्हें हम कथा कहानी के माध्यम से पकड़ सकते हैं और जो पाठक के हृदय, उनके संवेदन के ताप से, बकौल निर्मल वर्मा- ' पिघल कर बहने लगते हैं.'

'अपने-अपने कोणार्क' मेरी कथा यात्रा में कश्मीर से उड़ीसा का सफ़र है. उड़ीसा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर रचा गया यह उपन्यास कुनी के माध्यम से [illegible] समाज के साथ [illegible] केन्द्र में है कुनी का [illegible] और [illegible] होता है पर उसका कोई विकल्प, कोई [illegible]

पर अकेला टिका रहता है. 'कोणार्क' एक प्रतीक बन कर उपन्यास में आया जिसके शिल्प स्थापत्य से ही मैं प्रभावित नहीं हुई, बल्कि नरसिंहदेव के इस विजयस्तम्भ के निर्माण में उन अनाम बारह सौ शिल्पियों के तप और बलिदान से भी अभिभूत हुई जिनका इतिहास में कोई ज़िक्र नहीं. बहरहाल, कुन्ती ने जगन्नाथ धाम की परम्पराओं को बन्द आँखों नहीं स्वीकारा. समग्र संदर्भों के साथ अपने निर्णय लिए और जीवन की गति व दिशा तय की. अनिरुद्ध से विवाह करना पण्डितों की रूढ़ सोच के प्रतिरोध स्वरूप लिया गया निर्णय था. यह दूसरी बात है कि अनिरुद्ध में उसे एक सहज निष्कपट मित्र मिला. यह उपन्यास कुन्ती के माध्यम से जीवन के सत्य की खोज है. प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से अपने होने और जीने के अर्थ तलाशता है. सामाजिक रूढ़ियों को मैं इतना महत्त्व नहीं देती कि वे जीवन की ऊर्जा सोख लें.

उपन्यासों में बाह्य परिवेश को भी मैं कमोबेश उतना ही महत्त्व देती हूँ जितना व्यक्ति के आंतरिक परिवेश को. मैं मानती हूँ, हमें रचने में हमारा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश भी खासा ज़िम्मेदार होता है.

मेरी कई कहानियों और उपन्यासों में प्रकृति अपने अकूत वैभव के साथ मौजूद है, यह इसलिए कि परिवेश और प्रकृति को मैं व्यक्ति से अलग करके नहीं देखती. मेरा प्रकृति सौन्दर्य संपन्न प्रदेश से [illegible] होना भी इसका एक कारण हो सकता है. जिन्होंने [illegible] 'संगरमाल की छाती से दूध के झरने फूटने पर आकुल कलियों को अपने मासूम दरवाज़े खोलते नहीं देखा, और गुलाबों को रक्त-रक्त भर जाते, धूपों को अपने ज़ख्म दिखाते महसूस नहीं किया, उन्हें लग सकता है कि मैं वातावरण निर्माण में शब्दों की फिज़ूलखर्ची करती हूँ पर मेरी प्रकृति से घनी दोस्ती है, उसे अपने से अलग करना संभव नहीं.

करीब डेढ़ सौ कहानियाँ और छः उपन्यास लिखने के बाद भी लगता है, अभी काफी कुछ अनकहा रह गया है. आजकल 'सतीसर गाथा' उपन्यास पर काम कर रही हूँ. मेरे देखते-देखते मेरी जन्मभूमि कश्मीर में कई युग बदल गए. प्यार, दोस्ती और साँझी विरासतों की यह ज़मीन आतंक से त्रस्त, मुझे पहचानने से आज इंकार कर रही है. इस धरती से जुड़े लाखों बेघर, बेज़मीन और बेपहचान हुए लोगों की व्यथाओं से जुड़ना जैसे मेरे जीने की शर्त है, वैसे लेखन की भी. कुछ-कुछ वैसे ही जैसे एक फिलिस्तीनी, अफ्रीकी या तिब्बती लेखक अपने पड़ोसियों और आत्मीयों की यंत्रणा से अछूता नहीं रह सकता. वैसे मैं भी मानती हूँ कि मानवीय संवेग, सुख-दुःख सार्वभौमिक और सार्वकालिक होने के साथ समय का जीवन्त साक्ष्य भी होते हैं. समय के सवालों से टकराना और गलत का अस्वीकार मेरे लिए ज़रूरी है. क्योंकि मैं मानती हूँ कि अंततः मानवीय मूल्यों को बचाने की ज़िम्मेदारी साहित्य की ही है. निजी होते हुए भी वह सामाजिक है, तभी साहित्य कहलाता है.

आज भूमंडलीकरण के खतरों और विज्ञान के नवीनतम अन्वेषणों, दृश्य श्रव्य मीडिया, इंटरनेट के विस्तार ने साहित्य के मरने की आशंका पैदा कर दी है. कुछ उत्तर आधुनिक चिन्तक इस आतंक से त्रस्त भी हैं. मुझे ऐसा [illegible] कि आज साहित्य को अपनी त्वचा की रक्षा के लिए लड़ाई लड़नी पड़ रही है. विज्ञान जीवन के हर क्षेत्र में घुसपैठ कर चुका है, तो शैली-शिल्प, कथा कहने के अंदाज़े बयाँ में परिवर्तन आएगा ज़रूर. पर मैं मानती हूँ कि जब तक मनुष्य संवेदनहीन रोबोट न बन जाए, साहित्य की प्रासंगिकता बनी रहेगी. आखिर मनुष्य ने जब अपने सुख दुःख को दूसरे से शेयर करना चाहा, तभी तो कहानी का जन्म हुआ है. यह मनुष्य के अन्त के साथ ही मर सकती है तब तक साहित्यकार शब्द के माध्यम से मनुष्य को ज़िन्दा रखने की कोशिश बरकरार रखेगा.

~~[illegible]~~

चन्द्रकान्ता

नया पता :-
3020, सेक्टर-23
गुड़गाँव - 122017

(आगे के इसी पते पर पत्र - व्यवहार करें)